JULY2024

CAMPUSCHRONICLE

MAGAZINE DEVOTED TO THE YOUTH OF INDIA

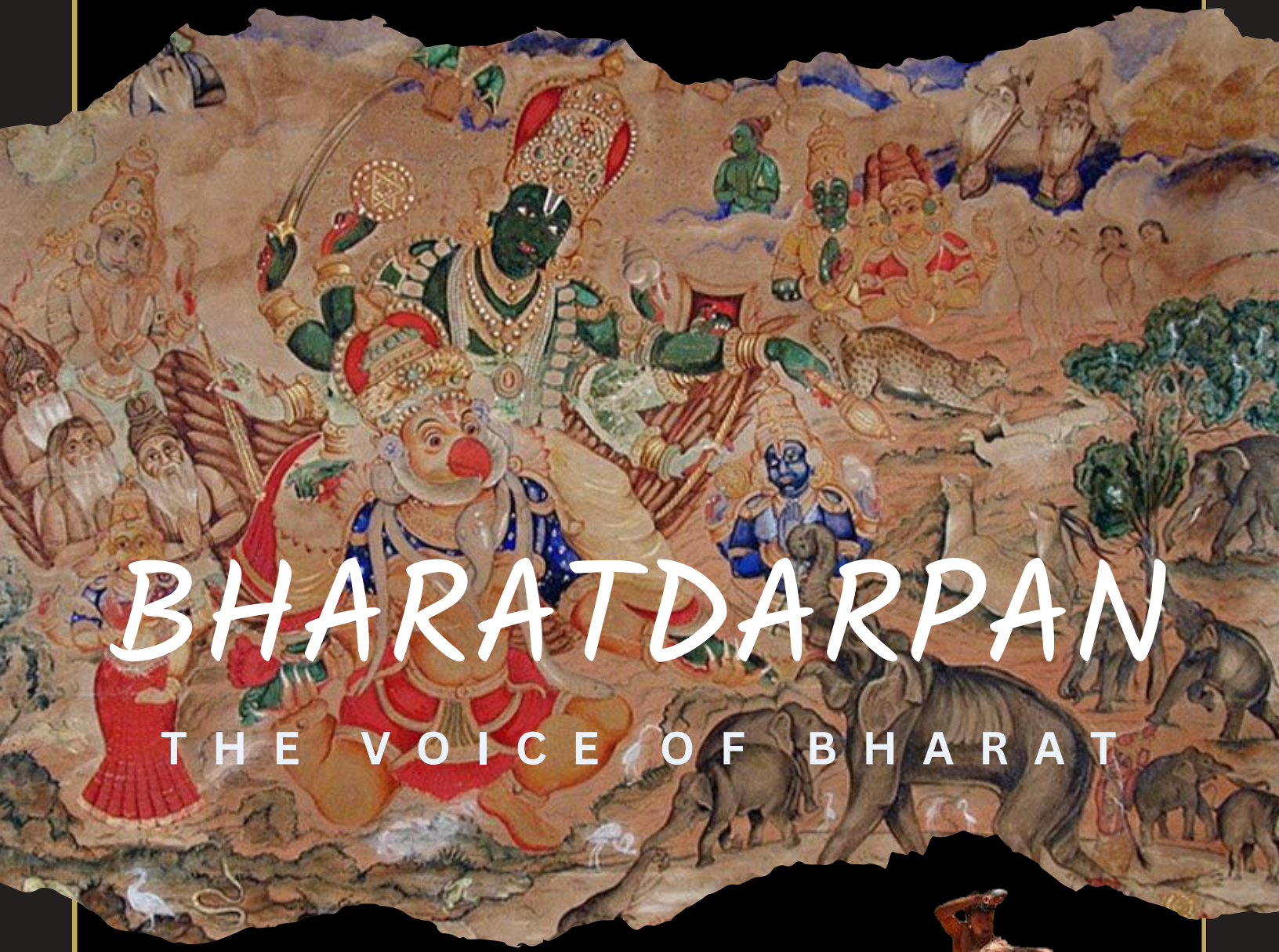

BHARATDARPAN

THE VOICE OF BHARAT

WWW.CAMPUSCHRONICLE.IN

Table of Contents

Our Team	02
Editor's Note	03
भारतीय राष्ट्रवाद	04
Ideological Conflicts	06
हत्या या हादसा	07
Women in Bharat	11
कलरीपयट्टू और मीनाक्षी अम्मा	13
Caste Dynamics in Flux	16
स्वामी विवेकानन्द का आंतरिक संदेश	19
Reclaiming the fundamental duties	21
काव्यांजलि	23

BHARAT दर्पण

www.campuschronicle.in

Editor-in-Chief

Lakshya Gupta

EDITORIAL BOARD

Ankush Kumar
Prateek Pandey
Shubham Kumar Shanu
Somya Tiwari
Punyavee Mohan
Shivansh Saxena
Priyanka Sharma
Ayush Kumar
Sneha Singh
Anannya Chauhan
Prabhakar Mall

SPECIAL THANKS

Magazine Designing: Somya Tiwari

Proof Reading: Punyavee Mohan, Sneha Singh, Anannya Chauhan

Research Analysts: Ayush Kumar, Annanya Chauhan

CAMPUS CHRONICLE

ABOUT US

YUVA's debut magazine Campus Chronicle is a first of its kind, and holds the uniqueness of being an entirely student-run monthly magazine. It is a product of diligent efforts of nationally conscious students who strive to bring in a change through dialogue, debate and deliberations. Today, mainstream media is plagued by viciousness and selective reporting. In a country whose sustainable growth depends on how well it capitalises on its demographic dividend, the young minds cannot be left to be played with at the hands of mainstream media. Therefore, it has become very important to understand a comprehensive view of issues today. Campus Chronicle is a substantial step in that direction. It carries articles, opinions and columns on significant issues surrounding the youth of today. The magazine is broadly divided into two parts: 'Campus' and 'Academics'.

From The Editor

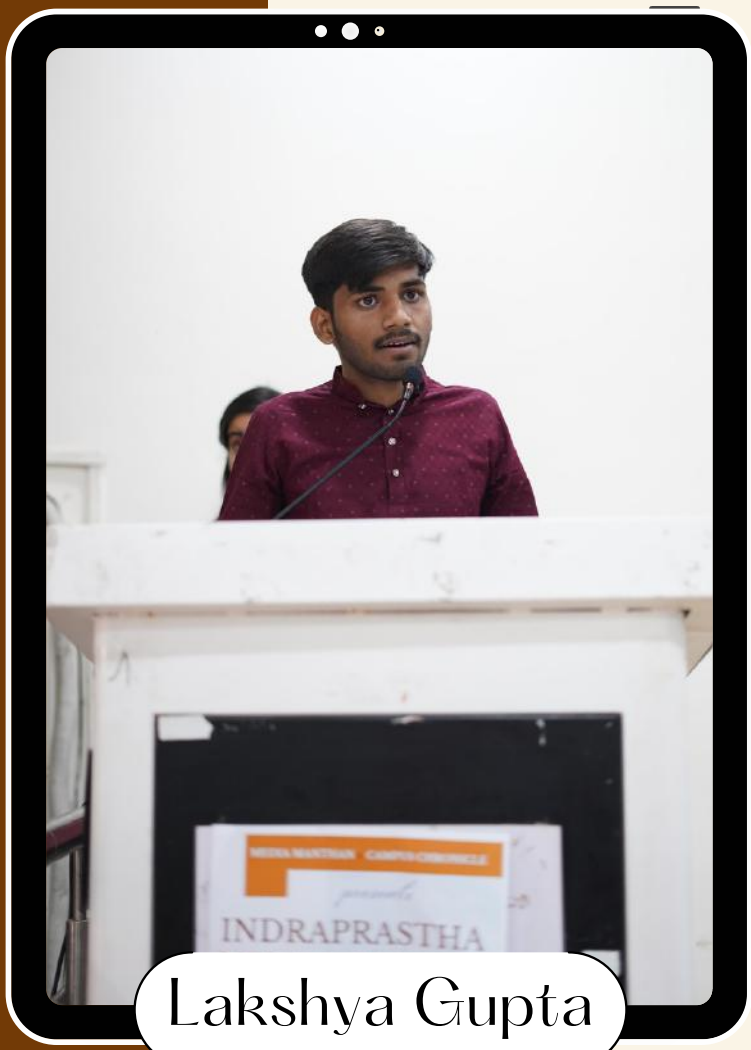

Lakshya Gupta

भारत.....

भारत एक ऐसा शब्द जो प्रत्येक भारतीय को गौरवशाली इतिहास की याद दिलाता है। भारत शब्द का वर्णन हमारे धर्म ग्रंथों में भी मिलता है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः ॥

अर्थात् जो समुद्र के उत्तर में है और हिमालय के दक्षिण में है , उस देश का नाम भारत है और उसमे रहने वाले लोग भारतीय हैं।

भारत का जो भाव है। भारत का जो नजरिया है, उसको भारत दर्पण के माध्यम से बताने का प्रयास किया गया है। भारत राष्ट्र में और राष्ट्रीयता के भाव में राष्ट्रवाद है। जिसका वर्णन भी लेख के माध्यम से किया गया है। इसके अतिरिक्त समकालीन कुछ प्रमुख घटनाओं का वर्णन लेखों द्वारा किया गया है। साथ ही लेख के अलावा विद्यार्थियों ने कविता के माध्यम से भी विचार व्यक्त किया है। जिसने भारत दर्पण को आप लोगों के लिए और रोचक बना दिया है।

Lakshya

Editor-in-Chief

भारतीय राष्ट्रवाद

विपाशु गौतम

पिछले कई सौ वर्षों में झांक कर देखने पर हमने कई राष्ट्र बनते एवं बिगड़ते देखे हैं। कई राष्ट्र तो भाषा के आधार पर टूट कर अपना अस्तित्व ही खो बैठे। कई राष्ट्र अपना पुराना नाम तो अभी भी लिए हुए है लेकिन अपनी राष्ट्रीय विरासत यानी कि अपनी संस्कृति खो बैठे हैं। परंतु भारत ऐसा राष्ट्र है जिसकी संस्कृति और भौगोलिक एकता की समझ हजारों वर्षों से जीवित है ।

एक राष्ट्र के लिए उसकी संस्कृति ही उस राष्ट्र की आत्मा का कार्य करती है और उसकी भौगोलिक सीमाएं उसके शरीर के रूप में रहती है। एक स्वस्थ राष्ट्र के लिए ये दोनों ही आवश्यक है, परंतु शरीर का अंग काट जाए तो पीड़ा अवश्य होती है परंतु यदि आत्मा ही निकल जाए तो प्राण भी क्षीण हो जाते है और वह राष्ट्र एक मृत देह है जिसका अपना कोई इतिहास नहीं है। उस राष्ट्र के लोग जो अपनी संस्कृति को खो बैठे है, ऐतिहासिक एकता की समझ के अभाव में अपने मन में एक सच्ची राष्ट्रभक्ति तथा भाईचारे का भाव खो बैठने में समय नहीं लगता। इन लोगों की दूसरे राष्ट्र द्वारा भटकाया जा सकता है।

परंतु भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसकी संस्कृति जीवित है और वही संस्कृति इस राष्ट्र के भौगोलिक क्षेत्र को पवित्र मानती है और हमें इसकी सीमाओं की रक्षा के लिए प्रेरित करती है ।

हमारे राष्ट्र में पहाड़ों को गिरीराज, नदियों को मां के समान पूजा जाता है। धरती को भारत माता के रूप में पूजा जाता है, इस धरती का एक इंच भी कोई भारतीय देने के लिए क्यों तैयार होगा? यहां हर क्षेत्र एक तीर्थ के रूप में खड़ा है। हमें धरती की पवित्रता की यह सीख हमारे ग्रंथों में विद्यमान महापुरुषों द्वारा ही दी गई है। रामायण में जब रावण से युद्ध जीतने के बाद लक्ष्मण उस स्वर्णमयी लंका को देखकर मोहित हो जाते हैं तब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम उनसे कहते है की –

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

अर्थात – हे लक्ष्मण! सोने की लंका भी मुझे नहीं रुचती। मुझे तो माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी अधिक प्रिय है।

यहां यह सीख हमें दी गई है म्लेच्छ भूमि कितनी भी सुंदर एवं मनमोहक क्यों न हो, परंतु अपनी मातृभूमि ही स्वर्ग के समान होती है और हमें हमेशा इसकी रक्षा करनी चाहिए।

इस राष्ट्र की संस्कृति वेदों, उपनिषदों, पुराणों, इतिहास ग्रंथों, बुद्ध त्रिपिटक, जैन ग्रंथ आदि में धारण की हुई है । और यह सभी ग्रंथ हमें एकता का ही संदेश देते है ।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

अर्थात् हम सब एक साथ चलें; एक साथ बोलें; हमारे मन एक हों।
ऐसा हमें वेद उपदेश करते हैं। यह हमारी एकता की भावना से भरी संस्कृति ही है जिसकी वजह से आज हमारा राष्ट्र गर्व से खुद को विश्व की प्राचीनतम सभ्यता कह सकता है।
हमारी भौगोलिक समझ हमारी सांस्कृतिक समझ से कभी कम नहीं रही है क्योंकि शरीर (सीमा) पर निरंतर आघात किए जाएंगे तो उस राष्ट्र के प्राण (संस्कृति) एक न एक दिन क्षीण हो ही जाएंगे। इसलिए इस धरती को एक सूत्र में बांधा गया है। हमारे पुराणों में इसकी समझ साफ दिखाई देती है।
उत्तरम् यत् समुद्रस्य हिमाद्रे: चैव दक्षिणम्। वर्षम् तद् भारतम् नाम भारती यत्र संतति: (विष्णु पुराण २.,३.१)।
समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश है उसे भारत कहते हैं तथा उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहते हैं।
भारत ने कभी विदेशी भूमि पर कब्ज़ा कर उनके लोगों पर अत्याचार या धर्म के आधार पर उत्पीड़न करने की नीयत नहीं रखी, परंतु अपनी सीमाओं की रक्षा करने में कभी झिझक नहीं दिखाई। कभी यदि हमारी धरती म्लेच्छों के अधीन भी हुई तो अनेकों शूरवीर पैदा हुए जिन्होंने इस धरती को स्वतंत्र करने के लिए अपनी प्राणों तक की आहुति दी। ये भारत के वीर पुत्र कभी चंद्रगुप्त तो कभी समुद्रगुप्त, स्कंदगुप्त हो या महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज हो या सुभाष चंद्र बोस किसी न किसी रूप में इस धरती की गरिमा को बनाए रखने के लिए प्राण तक दांव पर लगाए और इस धरती को स्वतंत्र करवाने में अहम भूमिका दी। आज भी हमारे वीर जवान सीयाचीन के बर्फीली ठंडी हवाओं में जहां शरीर भी जम जाता है वहां से लेकर जैसलमेर की तपती गर्मी में हमारे देश की सीमाओं की रक्षा करते है। नमन है ऐसे वीरों की ये प्रत्येक जवान अपने हृदय रूपी मंदिर के अंदर एक महाराणा, एक चंद्रगुप्त को धारण किए हुए है।
सीमाओं की रक्षा के साथ साथ हमारे राष्ट्र की आत्मा यानी की संस्कृति को भी संरक्षित करने तथा स्वच्छ रखने के लिए भी अनेकों महापुरुष समय समय पर आगे आए। प्राचीन काल के व्यास, गौतम आदि ऋषि से लेकर शंकराचार्य जिन्होंने भारत के चार भागों में चार मठों की स्थापना की। तुलसीदास जैसे कवि जिन्होंने रामायण को पुन: मुख्यधारा में लाया। महात्मा बुद्ध जैसे महान व्यक्ति जिन्होंने तर्क का महत्व बतलाया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने वेदों की और लौटने का उपदेश दिया। इस प्रकार ये संस्कृति हमेशा जीवित रही।
हमारी संस्कृति ही हमें एक गौरवान्वित भारतीय होने का अवसर देती है। हमारी यही भावना को इस धरती को पवित्र मानती है और संस्कारों और ग्रंथो को अब भी उचित सम्मान देती है, इसी कारण आज हमारा राष्ट्र जीवित है। यह केवल एक भूमि का टुकड़ा न होकर एक महान सभ्यता है। इस राष्ट्र की गरिमा इसी प्रकार बढ़ती रहे ।

IDEOLOGICAL

CONFLICTS

By Shriya Mathur

First of all, what are ideological conflicts? It refers to the disagreements or clashes between different individuals and groups with fundamentally different belief systems, values, or principles. The conflicts arise generally when the people hold opposing views over anything; it can be anything, either the politics (like democracy vs. dictatorship), religion (the differences of views between Shivaite and Vaishnavite), economics (social economy or liberal one), social issues (views on the LGBTQ+ community), or ethics and morality. Having opinions promotes individuality, but it can also have certain negative effects, which are polarization, emotional intensity, personal attacks, social divisions, and conflict escalation. Ideological differences were raised during World Wars too, but the perfect example of ideological conflicts on the world level are cold wars that once divided the world. After World War II, the superpowers emerged: the United States and the Soviet Union, and the different ideologies set the stage for conflict. Each promoting their ideologies of capitalism and communism. It was characterized by nuclear arms races, espionage, and proxy wars. It not only affected the US and the Soviet Union but also other countries in the world and, of course, its citizens.

Considering ideological differences at the world level is more important than ideological differences of individuals or groups for several reasons, which are as follows: first, global ideological differences can lead to conflicts, wars, and geopolitical tensions, affecting millions of lives. Second, international relations because national interests, alliances, and international organizations are shaped by ideological differences. Third would be global governance: ideological differences influence decision-making on global issues like climate change, human rights, and economic policies. Fourth, security and stability, as the differences in opinions can lead to security threats, terrorism, and instability. Fifth, economic consequences because it can impact trade, investment, and economic development. Sixth, human rights and dignity, as ideological differences at the world level can affect human rights, dignity, and social justice. Seventh, environmental consequences, as conflict in views can influence environmental policies and sustainable development. Eighth, Technological Implications because global ideological differences can shape the development and use of emerging technologies.

Now the question arises: how to resolve the ideological conflicts that are bound to arise in a world full of diverse countries? It is possible by encouraging open communication and negotiations through dialogue and diplomacy. Foster tolerance and respect for diverse perspectives by showing empathy and understanding towards everyone. Establishing international institutions and processes for resolving disputes peacefully. Strengthening and upholding international laws and norms. By promoting critical thinking, strong media literacy, and fact-based information. Encouraging leaders to engage in diplomatic efforts and compromise. Fostering connections between citizens of the different countries will also increase the understanding and appreciation for various traditions and opinions. Addressing inequality and injustice and other global issues can also be helpful in resolving the issue. Celebrating diversity and promoting inclusive societies can promote peaceful environments and will increase cooperation in the world. Mahatma Gandhi ji has also quoted that “it is good to have differences, but it is not good to allow those differences to create conflicts.”.

In conclusion, as we move forward in an increasingly interconnected world, it is crucial that we prioritize understanding, empathy, and cooperation. Let us work together to create a global community that values diversity of thought and promotes peaceful resolution of ideological conflicts. The future of our world depends on it. In the face of ideological conflicts, we have a choice: to let our differences tear us apart or to use them as an opportunity for growth and understanding. Let us choose the path of wisdom, compassion, and cooperation and work towards a brighter future for all.

हत्या या हादसा ?

- सोनवीर चौधरी

राष्ट्र की सबसे ताकतवर शक्ति युवा शक्ति है, क्योंकि..... एक युवा ही नई ऊर्जा, नया जोश, नई सोच का स्त्रोत होता है।

ये शब्द हैं स्वामी विवेकानन्द जी के देश के युवाओं के बारे में, वो मानते थे कि भारत को आगे बढ़ना है तो, युवाओं को जगाना होगा, उनकी शक्ति, उनकी अतुलनीय व अनगिनत ऊर्जा को देश के विकास में और चरित्र निर्माण में लगाना होगा।

लेकिन इस देश का युवा समकालीन में सुरक्षित नहीं हैं, वो सुरक्षित होगा, तभी तो उसकी ऊर्जा को विकास में लगाना जाएगा।

बीते महीने की 27 जुलाई , दिन शनिवार को ऐसे ही तीन युवाओं को, इस देश की गंदी राजनीति, खोखला तंत्र और भ्रष्ट्राचार के हाथों अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, वो युवा जो कभी भविष्य में IAS, IPS होते, जो इस देश की साख बढाते, वो युवा जो देश की सेवा करना चाहते थे, जो भ्रष्टाचार को कम करना चाहते थे और उसी भ्रष्ट्राचार ने उनकी दर्दनाक तरीके से जान लेली ।

"ये ओल्ड राजेन्द्र नगर है ना, यहाँ पर आपको जज्बो का, उम्मीदों का, निराशाओं का अनगिनत कहानियाँ सुनने मिलेगा ।"

ये शब्द हैं "द वायरल फीवर" द्वारा बनाई गई वेब सीरीज 'एसपामरेन्दस' (Aspirants) के, जिसने न जाने कितने ही युवाओं को सपने दिखाये होंगे, IAS, IPS और IFS बनने के बिए । सिनेमा में जो दिखाया जाता है, उससे वास्तविकता कोशों दूर है।

दरअसल, 27 जुलाई को दिल्ली में करीब 5 बजे, 15-20 मिनट बारिश के बाद, बारिश का सारा पानी सड़क पर उफ़न के बहने लगा, पानी को जहाँ से निकलना था, वहाँ उसे जगह न मिली, क्योंकि दिल्ली की जल निकासी व्यवस्था, इस देश के भ्रष्टाचार तले चौक हो चुकी थी, ठीक वैसे ही जैसे एम०सी०डी के अधिकारियों का घूस खा- खा कर मुँह चौक हो जाता है। पानी को जब रास्ता नहीं मिला तो उसने अपना खुद का रास्ता बनाया, तो वो रास्ता मिला एक बेसमेन्ट का, जहाँ , कुछ बच्चे अपने सजाए हुये सपनों को साकार करने के लिए मेहनत कर रहे थे, वो बच्चे जो कभी सरकारी अफसर होते, सपनों में मग्न और उन्हें पूरा करने की जिद और मेहनत में लगे हमारे युवा, हमारे UPSC Aspisants इस बात से अज्ञ थे कि पानी उनका काल बनकर आ रहा है।

हत्या या हादसा ?

राव आई.ए.एस स्टडी सर्कल संस्थान के बेसमेंट में बनी पुस्तकालय में पढ़ रहे वो विद्यार्थी जो इस निर्लज्ज शासन, कोचिंग माफियों के हत्ये अपनी जान गंवा बैठे। बियोमेट्रिक पुस्तकालय जो पानी के भराव से शार्ट हो चुकी भी और अन्दर फंसे बच्चों की जान हल्क में थी दरवाजा जब नहीं खुला तो, उन्होंने टेबल पर खड़ा होना शुरु किया, पानी का बहाव इतना तेज था कि तीन मिनट में 12 फीट पानी भर चुका था, साथ-ही- साथ बच्चों की जिन्दा रहने की उम्मीद भी मर चुकी थी, नतीजा ये हुआ कि वो निर्दोष तीन बच्चे इस गैर-कानूनी, घूसखोर सरकार, आलसी कर्मचारी और बच्चों का खून चूसने वाले कोचिन संस्थानों की गिरफ्त में आकर अपनी जान दे बैठे।

सवाल उठता है कि "क्या ये हादसा था या हत्या थी?

नीलेश राय, 26 वर्षीय यू.पी.एस.सी. की तैयारी कर रहा छात्र, जो आने वाले महीनों में मेन्स् की परीक्षा देने वाला था, जिसका UPSC का प्री- क्वालिफाई हो चुका था। वो छात्र 22 जुलाई को पटेल नगर में लाईट के करेन्ट से अपनी जान गंवा बैठा । लट्ठों पर तारों का लटका हुआ जखीरा उस होनहार छात्र की जान ले बैठा ।

पूछता हूँ क्या ये हादसा था ?

अंजलि गोपनारायण, 21 वर्षीय छात्रा, वो भी UPSC की छात्रा थी, कुछ सपने लेकर आई थी लेकिन इस देश की शोषण करने वाली जनता ने, उसकी जान ले ली, वो इस ओल्ड राजेंद्र नगर की जीवन शैली से तंग आ चुकी थी, मकान मालिक, ब्रोकर से तंग आकर उसने खुदखुशी कर ली अंजलि के अंतिम शब्द थे-

"मुठ्ठी में कुछ सपने लेकर भरकर जेबों में आशाएँ ।

• सहमी सी भी तब, जब मैंने ओआरएन की तरफ अपने कदम बढाए, मन परेशान, घर से दूर, दल्लों से जब हमने हाथ मिलाए

सामने कहा कि बुलाना भाई, पर पीछे से कुछ अलग रंग दिखाए ।

जानती नहीं थी तब, कि धंधा कैसे चलता है, सामने जो था मिट्ठू बना, वही मारक निकलता है।।

• मुनाफे के लिए वो अपने, स्टोर रूम जैसा कमरा दिखाएँ। गुजारिश भी करें हम कुछ पैसे कम करने की, तो उल्टा वो हमें ही धमकाएँ "

• इन्सान कहाँ है उनके लिए, सिर्फ पैसों पर उनका दिल पिघलता है।

और इस सब जद्दोजहद में, आँखों में आशा लेकर हताश बैठे अपने पिता को देखकर मेरा दिल जलता है।

सपने की सौदागरी में, उन्हें हम जैसा ग्राहक मिलता है जिसे जिन्दगी का भी सच मालूम नहीं, पर नौकरशाही में जगह बनाने को उसका दिल मचलता है।

• अब इतना पैसा देने के बाद पढाई पर उसका ध्यान होना चाहिए। पर आधा दिन तो उसका टिफिन कहाँ से लेना, बिल कम आए उसके लिए ऐ.सी. कब-कब चलानी है।
खुद को लूटने से कैसे बचाना है इसमें ही निकलता है।
खून चूसने वालों के बीच में रहकर, बच्चे को अपने ही घर बात करने का समय कहाँ निकलता है।

हत्या या हादसा ?

वहाँ 65 की उम्र के बुजुर्ग को, उम्र का न लिहाज है , न इल्म इस बात का, कि हम बच्चों की भी काई आवाज है।
• कभी खुद के बाप ने भी जैसे हाथ न पकड़ा था, इन महापुरुष ने उससे भी बुरी तरह मेरी कलाई को जो पकडा था।

• जब निकाल रहे ये मुझे ही मेरे कमरे से भरी दुपहर में तब शायद भूल गए थे कि इनकी भी कोई बेटी है घर में,

• वैसे तो बहुत अच्छे लोग थे वहाँ, जो दावा ये करते थे कि, होगी न परेशानी कोई, ज़रा भी हम बच्चों को ,
पर मदद की जब बारी आई, तो जाने सब थे कहाँ ।

आधी रात को जब नशे में धुत, इनका ही कोई बेटा हमारा दरवाजा पीटता है।

डर में चीखते - चिल्लाते हैं, मदद की गुहार लगाते हैं पर कोई हमारी न सुनता है।।

• दल्ले को फोन जब हम तीन मिलाते है, कुछ ऐसे वो हमें समझातें हैं, कि दरवाजा मत खोलना बस तुम, हम सुबह बात करते हैं।

क्या होता अगर उस रात वो अन्दर घुस आता, नशे में रहकर पता नहीं क्या- क्या कर जाता ।
कौन जिम्मेदारी लेता, जब दल्लों का किया गया हमारे माँ-बाप से वो वादा जो टूट जाता।
उनका तो बेटा था , पर हम थीं बाहर आई हुई बेटियाँ, अंत में हमारा ही मजाक बन जाता
• दुख हुआ, जब पता चला, पैसे के इस खेल में कितने मां बाप ने अपने बच्चों को खो दिया।
हमारी तो बात सिर्फ इज्जत की थी, पर उन्होंने तो अपनी जान को गंवा दिया ।

वहाँ कोई जिम्मेदारी नहीं लेता, सिर्फ पैसे उन्हें लुभाते हैं। वहाँ जा रहे हैं रहने के लिए आप, या रह रहे हैं अभी भी वहाँ,
तो ध्यान रखिये, आप अपनी जान की कीमत क्या लगाते हैं।

अंजलि के शब्द आपको काँपने पर मजबूर कर देंगे. रोने को मजबूर कर देंगे। आखिर शिक्षा की ये कीमत है इस देश में, चाणक्य, आर्यभट्ट न जाने कितने ही ऋषि-मुनियों के इस अनादि काल से चले आ रहे भारत में आज शिक्षा व्यवसाम बन चुकी है।, क्या सरकार सोई हुई है या सोने का नाटक करती है। क्या उनका मुंह पैसों से सिल दिया गया है कि विद्यार्थी की ऐसी हालत पर उन्हें कुछ बोलना नहीं है, कोई प्रतिक्रिया देनी नहीं है।
हजारों लाखों बच्चे, विद्यार्थी अपने सपने संजोये, आशा लिये आते हैं इस शहर में, एक दिन अधिकारी बनेंगे ,लेकिन उन्हें क्या पता होता है कि कुछ दिन बाद ही उनके माँ-बाप यहाँ से उनकी लाश (शव) ले जाऐंगे, उनके मरे हुने सपने ले जाऐंगे ।

'अनापत्ति प्रमाण पत्र' (NOC) न होने के बावजूद भी, बेसमेन्ट में कक्षाएं चलायी जाती है, जहाँ न कोई सुरक्षा है और न किसी आपातकालीन में निकले के लिए दरवाजा । संस्थाओं में फीस तो मोटी वसूल की जाती है (लगभग 2 लाख, केवल ५९ के लिए) लेकिन सुरक्षा के मामले में सब ठूस्स है, यहाँ बच्चों की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ किया जाता है।

शिक्षा को व्यवसाय कैसे बनाया है?...
आइये देखते हैं-
जी०एस. कोर्स की फीस - करीब 2 लाख, वैकल्पिक विषस की फीस करीब 60 हजार, सी० सेंट 16000, उसके बाद अलग चार्ज होते हैं।, बच्चों के सपनों को खरीदा जाता है, उनकी भावनाओं की नाममात्र भी इज्जत न करके उनसे मोटा पैसा वसूला जाता है।
कोचिंग माफियाओं के अलावा भी, ओआरएन और मुखर्जी नगर जैसे संस्थाओं के हब स्थानों पर आए विद्यार्थी, जब रहने के लिए अपना कमरा ढूँढने जाते हैं तो उन्हें हर गली के कोने पर एक प्रॉपर्टी डीलर जरूर मिलेगा, जो कमरा दिखाने के मौके को पाकर मौटा पैसा वसूलने कोशिश करता है। डीलर लोग आपस में मिले होते हैं, इनका इन जगहों पर एक पूरा नेटवर्क होता है जो सिर्फ विद्यार्थी को लुभाते ही नहीं बल्कि उन्हें जर्जर, सीलन की बदबू बिना खिड़की वाला कमरा दिखाकर, कमरे के किराये के आधे जितना कमीशन खाते है और सुरक्षा की गारंटी नहीं देते। जरुरत के समय जब विद्यार्थी मदद मांगने जाते हैं तो पल्ला झाड़कर अलग हो जाते हैं।

हत्या या हादसा ?

ORN, करोल बाग, पटेल नगर, मुखर्जीनगर, नेहरु विहार, आदि कुछ स्थान जहाँ पर बच्चे ज्यादा तादात में तैयारी करने आते हैं, वहाँ के ओनर्स ईन डीलरों के साथ मिलकर बच्चों से जितना पैसा खींच सके, वो कोशिश करते हैं।, कर न देना पड़े इसके लिए वो कैश में पैसा लेते हैं। ORN जेसी जगहों पर जहाँ 3-3 और 4 4 के कमरों का किराया करीब 18-24 हजार होता है। सोचने वाली बात है कि विद्यार्थियों के माँ-बाप द्वारा मेहनत से कमायी गई रकम को ये लोग मुफ्त में लूटते है। इतना पैसा खाने के बावजूद भी बच्चे की कोई सुरक्षा नहीं। किराया एक दिन देरी से मिले तो कमरा छोड़ने के लिए धमकी देते हैं, बाहर निकालने की धमकी देते हैं। पैसे के साथ-साथ न जाने कितने ही विद्यार्थियों को, ये सब मिलकर हत्या करके हैं खा जाते हैं और डकार भी नहीं लेते।

दिल्ली सरकार चिल्ला - चिल्लाकर कहती है कि दिल्ली में फ्री पानी की व्यवस्था है और 200 यूनिट मुफ्त बिजली, इसके अलावा भी owners सव-मीटर लगाकर 10-15 रुपये, यूनिट विजली का बिल वस्रलते हैं। इन जगहों के इतने नरभक्षी लोग हैं कि मानवता इनके अन्दर से मर चुकी है। इनको पैसा चाहिए, पैसे के चक्कर में ये लोग इतने निर्लज्ज, कपटी, कमीने और अमानवीय व्यवहार करने लग गए है कि खुदा भी अपनी बनाई इस मानव रूपी मायावी चीज को देखकर रोता होगा। इतना पैसा खर्च करने के अलावा भी, विद्यार्थियों को ORN और मुखर्जी जैसे जगहों पर सुरक्षा, शुद्ध वातावरण और नहाने व पीने के लिए स्वच्छ पानी भी नहीं मिलता । पानी से बदबू आती है, रास्तों पर जब निकलते हैं तो लगता है कि कचरे के कुएं में फेंक दिया गया है, जहाँ दम घुटकर मृत्यु हो जाएगी।

सफाई का कहीं नाम नहीं मिलता, नालों से पानी ओवरफ्लो होता है, और सड़क पर आ जाता है।

इन सब के अलावा, जब विद्यार्थी अपने शरीर का अंग - अंग काटकर अपनी जरूरत के लिए इन भिखमंगों को दे देते हैं तो कुछ ढाबा वाले टिफिन सर्विस वाले बच्चों के हाड़ चाटने के लिए तैयार बैठे होते हैं, मैगी 50 रुपये, थाली 100 rupye,

रात 11-12 बजे के बाद इन चीजों के दाम और बढ़ जाते हैं।, बेस्वाद, बासी भोजन को विद्यार्थी अपने सपनों की खातिर खुशी-खुशी खाते हैं और बिना शिकायत किए खाते हैं।

क्या यही है, स्वामी जी के सपनों का युवा,क्या इतना करने के बाद भी इस युवा में ताकत बच पाएगी, क्या वो आगे जाकर देश को संभाल पाएगा।

देश की सेवा की कसमें खाने वाले विद्यार्थी यहाँ के भ्रष्टाचार, अमानवीय व्यवहार और कुकर्म को देखकर, जब वो एक IAS व IPS बनते हैं तो वो उस पद का फायदा उठाकर, अपने शरीर से काटी गई चर्बी को भरने की कोशिश करते हैं. और इस तरह वो भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ते हैं।-

सोचिए, सोचने को मजबूर होइए, क्या इसके अलावा भी कहीं नर्क है, अगर भगवान ने कहीं नर्क की रचना की है तो वो इस नर्क से तो लाख गुणा बेहतर होगा जहाँ इस तरह से पीड़ाएँ ,प्रताड़नाएं और शौषण नहीं किया जाता होगा।

कौन जिम्मेदार है इस सबका ? कौन दोषी नहीं है?

क्या दिल्ली सरकार दोषी नहीं है? LG सहाब की नीतियों दोषी नहीं है ?
भ्रष्ट MCD अधिकारी दोषी नहीं हैं?
कोचिंग माफिया दोषी नहीं है? प्रॉपर्टी डीलर्स, ब्रोकर दोषी नहीं है?

इन सबका यह तंत्र मिला हुआ है जो सिर्फ आम जनता और मेहनती विद्यार्थियों का शोषण कर उन्हें लूटता है।

"टूटे हुये सपनों की कौन सुने सिसकी ,
अन्तर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी।

अटल बिहारी वाजपायी -

श्रेया यादव, तान्या सोनी, नीलेश राय और नविन डालविन को भावपूर्ण श्रृद्धांजलि ।

WOMEN IN BHARAT

UNVEILING THE TRUTH

By Priyanshi Sahu

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः, यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः" echoes a verse from the Manusmriti (chapter 3, verse 56). Rendered in English, it means 'where women are worshiped, the gods reside; but where women are not revered, all good deeds become fruitless'. This stands in stark contrast to the misleading portrayal of ancient India by the biased western media, as retrogressive and pejorative to women. Moreover, they unjustly blamed Sanatan Dharma to conveniently mask their lies. Women in ancient Bharat have always been empowered and enjoyed equal status as men, a narrative often overshadowed by the media and books. The present-day ill-practices against women are associated with the invasion of arbitrary Abrahamic forces.

For centuries, women have been considered as embodiment of Shakti in Bharat. Shakti in Hinduism is the 'universal power' which is the energy that drives the entire universe, it is creation, protection, and nourishment. In Hinduism, knowledge and wealth have also been represented as divine feminine, and personified as goddesses, Mahalakshmi and Saraswati. They are worshipped in every Hindu household. In Hindu families, daughters are seen as embodiment of Devi Lakshmi, who considered to bring good luck and prosperity in their families.

Indian scriptures have given females an equal status as that of males. In Hinduism, Ardhanarishvar is a form of lord Shiva and Shakti merged as equal halves, symbolising the unity and balance of masculine and feminine energies in the universe. It represents the importance and oneness of both genders. In the Vedas, both men and women have been given the equal right to perform religious rituals. The Vedic period had set equal rights for both males and females in terms of education, property, and social orders. Women enjoyed freedom of speech and liberty at that time.

Females in Bharat have played significant roles in the Vedic era. They received adequate education and were encouraged to study the Vedas, Upanishads, and other sacred texts. They were allowed to learn and teach various subjects, including mathematics, astronomy, and medicine. Co-education was a practice during that time as both men and women received equal attention from the teacher. The women who chose Vedic education and attaining higher knowledge were called 'brahmavadinis'. Those who chose to marry were known as 'sadyodvahas' and studied the Vedas till marriage. In the Kshatriya societies, women were trained with martial arts and arms. Females wrote and composed hymns, poems and excelled in fine arts.

Many prominent female figures appear in Indian texts, both in divine and human forms. Women like Gargi, Maitreyi and Lopamudra were renowned Vedic philosophers and scholars. They are well known for their intelligence and wisdom and have authored several hymns and verses in the Rigveda.

In Indian marriages, the wife is known as 'ardhangini', meaning that she is the 'better-half' of a man without whom, his life will be incomplete. Married women were given an equal status as their husbands in the Vedic era and had equal shares in their property. Kshatriya women could choose their grooms in an event known as 'swayamvara'. Women were allowed to divorce and even remarry under certain conditions. A widowed woman was never ill-treated during that period, unlike the harsh behaviours against them that came up in the later years. Widows could choose to take 'sanyaasa' or choose remarriage in special conditions. The historical narrative of Bharat also has mentions of brave female warriors and even rulers. Some of them are Vishpala, from the Rigveda, Kaikeyi from the Ramayana, and Shikhandi from Mahabharata. Even during the post-Vedic period, women have ruled in many parts of Bharat under many dynasties. Even King Ashoka sent her daughter Sanghmitra to Shri Lanka for propagation of Budhism.

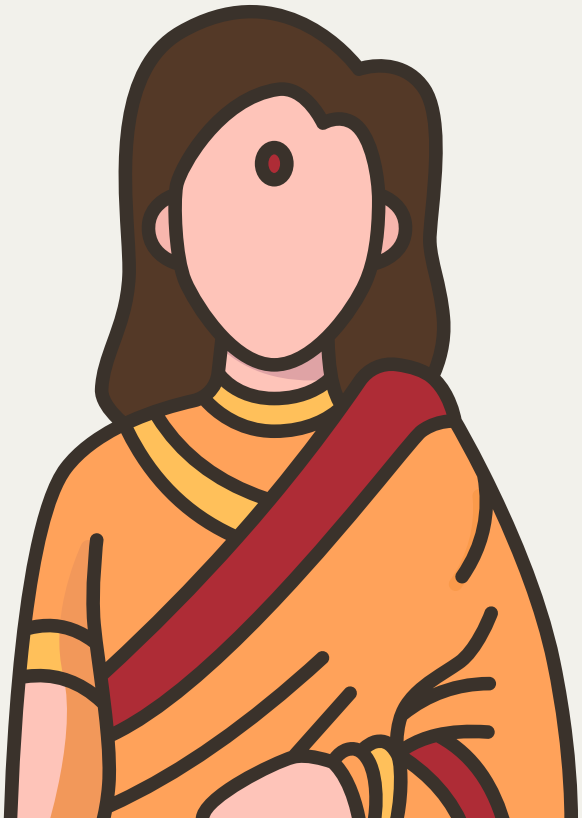

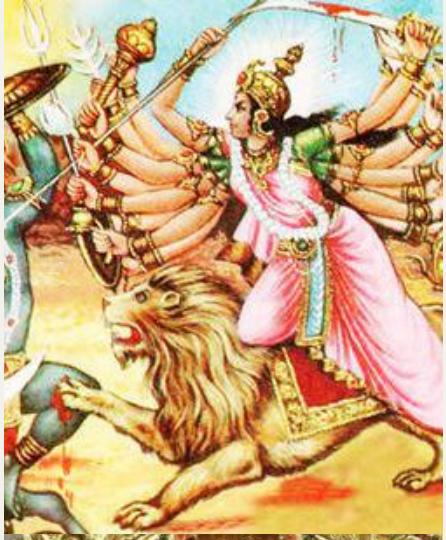

Bharat in the Vedic age was the only large society that focused on women empowerment. Sadly, due to the tyrannic Islamic invasions, this golden age of women empowerment was eclipsed. These invaders brought with them the Abrahamic traditions to Bharat which restrict women the access to education and career opportunities. Their norms expect women to take on more domestic responsibilities. They introduced the purdah system in Bharat, which forced women to use veil to conceal themselves from public observation. Women started staying indoors as they were forcibly taken away from their homes by the authorities under these fanatic rulers, and were raped, trafficked, and married against their will. Their inhumane practices against women like kidnapping, torturing, and using them as sex slaves gave birth to practices like female homicide, sati. It should be noted that these practices never existed in the Vedic period. The access to education and participation in social activities were restricted, and their freedom was curtailed during the medieval period.

Unfortunately, some of these practices are continued in many parts of India. In the recent decades, practices like dowry and casteism became more rigid. Post-independence, India's constitution recognized gender equality without struggling much, for example the right to vote was given to women immediately after independence, unlike the west where women must fight for decades to secure their right to vote. Today, the Indian government has introduced many laws to protect females' rights, including equal wages, inheritance of property and allowed them to join the armed forces. Although there are adequate laws to counter the crimes against women such as domestic violence, rape, and dowry; there is a need for better implementation and timely discharge of judgements.

For years, a distorted lens has been used to view Bharat's progressive history, efficiently brainwashing the globe into believing that the Indian culture has been demeaning to women. It is time to uncover this prevailing brainwashed narrative and re-establish the status women enjoyed in Bharat earlier.

कलरीपयट्टू और मीनाक्षी अम्मा

– राजदीप सिंह

भारतीय सभ्यता के विकसित मानव आज से लगभग 3000 वर्ष ईसा पूर्व ताम्रपाषाण काल में अस्त्रों-शास्त्रों का प्रयोग करते थे जिनके प्रमाण हमें भीमबैठिका जैसी गुफाओं में आसानी से प्राप्त हो जायेंगे। तब हम मान सकते है कि भारत में युद्ध विद्या का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। विश्वभर में इन अस्त्र शस्त्रों के सहारे लड़े जाने वाली अनेक कलाएं मौजूद है इसके अतिरिक्त ऐसी युद्ध विद्याएं भी मौजूद है जिनमें किसी अस्त्र का प्रयोग नहीं किया जाता है। आप और हम में से कई लोग उन्हें जूडो, कराटे, वुशु, मिक्स मार्शल आर्ट्स, कुंग फु, आई कादो, शाओलिन , ताइक्वांडो आदि आदि। लेकिन क्या आप जानते है इन सभी के जन्म कहां से हुआ ? अगर नही जानते हैं तो मैं आपको बता दूं कि प्राचीनकाल में भारत आने वाले विदेशी यात्री ने न केवल भारत से ज्ञान और पदार्थो को आयत किया अपितु उन्होंने भारत में पाई जाने वाली कलाएं पर सिद्धहस्तता प्राप्त की। कालांतर में वे जब इन कलाओं को अपने देशों में ले गए तो परिस्थिति अनुसार उनके बदलाव करके नए स्वरूपों में सामने लाए। भारत में प्राचीन युद्ध कलाओं कलरीपयट्टू , सिलबम्म , गतका, हुयेन लेंगलॉन, वर्माकलाई, मल्लयुद्ध, कुत्तू वारीझाई आदि उपस्थित है , इन सभी मार्शल आर्टस में जो प्रमुख रूप से सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है उसमे कलरीपयट्टू एक प्रमुख विधा के रूप के सामने आता है।

कल्लरी विश्व में पाया जाने वाला सबसे प्राचीन जीवंत मार्शल आर्ट्स है। कल्लरी के उद्भव की कहानी भी बेजोड़ है , कल्लरी का उद्भव आज से करीब 2500 वर्ष पहले से माना जाता है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख संगम काल (६०० बीसीई से ३०० बीसीई) के प्रसिद्ध ग्रंथ शिल्प्पदीकाराम से प्राप्त होता है जिसमें उल्लेख किया गया है कि सेना का प्रत्येक योद्धा कल्लरी का कठोर अभ्यास किया करता था। स्थानीय लोकगीतों में इसको 3000 वर्षो से अधिक प्राचीन बताया जाता है और वे इसका श्रेय हिंदू देवी देवताओं को देते है। ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है कि देवराज इंद्र ने वृत्तासुर नामक राक्षस के मर्म स्थलों पर प्रहार (कल्लरी का प्रयोग) कर उसका अंत किया। कल्लरी में बताए गए 108 मर्म स्थलों का उल्लेख बाद में 6ठी शताब्दी के आयुर्वेदाचार्य सुश्रुत ने अपने ग्रंथ में सुश्रुत संहिता में बताया कि अगर इन मर्म स्थलों पर किसी हथियार अथवा हाथों से प्रहार किया जाता है तो व्यक्ति की मृत्यु तक हो सकती है।

कल्लरी के उद्भव में दूसरी कहानी जो की मलयाली लोकजीवन में मिलती है कि लोकगीतों में भगवान परशुराम की वंदना की गई है क्योंकि उनको कल्लरी का आद्यगुरु माना गया है। परशुराम ने भगवान शिव से इस विद्या को ग्रहण किया और उन्होंने अपने तपस्थल केरल में कल्लरी की शिक्षा देना प्रारंभ किया , उन्होंने केरला के 108 शिष्यों को कल्लरी में विशेषज्ञता प्रदान की और 21 गुरुओं को शत्रु विनाश के लिए दक्ष किया। धनुर्वेद में समस्त भारतीय युद्ध कलाओं का वर्णन है कल्लरी का उल्लेख वहां से प्राप्त होता है।

कालांतर में केरल में रहने वाली नायर और एजहावा नामक जातियां कल्लरी की वंशानुगत परंपरा जो जीवित किए हुए है। प्राचीन काल में सैनिक अथवा रक्षकों ने इसका उपयोग युद्ध कौशल की दृष्टि से प्रारंभ किया। 9वी शताब्दी के दौरान कलरिप्पायट्टू और अधिक विकसित हो गया क्योंकि सैनिकों ने केरल की सीमाओं और राजा के रक्षा उद्देश्यों के लिए इस तकनीक का अभ्यास किया। लेकिन यह 11 वीं और 12 वीं शताब्दी के दौरान चलने वाले 100 साल के युद्ध (300 बी सी- 1279 ए डी) के दौरान चेर, चोल और पांड्य राज्यों के बीच गौरव का चरम बन गया। इसका पहला पश्चिमी उल्लेख पुर्तगाली अन्वेषक बर्बोसा दुआर्ते का मिलता है : " स्थानीय लोकगीत वदक्कन पत्तुकल के अनुसार प्रसिद्ध चेकवारी महिलाएं इसका अभ्यास करती थी , वे उरूमि या लचीली तलवार की निपुण योद्धा थी।" एक्सहेट्टर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर फिलिप कल्लरी को कम से कम 12 सदी पुराना बताते है।

चूंकि कलारीपायट्टू रक्षा युद्ध का सबसे पुराना रूप है, इसे मार्शल आर्ट्स की मां कहा जाता है, केवल भारत से ही अन्य एशियाई देशों ने कराटे, कुंगफू और जिउ-जित्सु जैसे मार्शल आर्ट के अपने तरीके को विकसित किया जो चीन और अन्य सुदूर पूर्व में फैल गया था।

कल्लरी प्रशिक्षण

कल्लरी को परंपरागत रूप से सिखाने के लिए प्रशिक्षण स्थल को वास्तुशास्त्र के अनुसार तैयार किया जाता है , स्थल का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर तथा मुख्य द्वार केंद्र के दाहिनी ओर बनाया जाता है। प्रशिक्षण स्थल के दक्षिण पश्चिम में पुत्तारा की स्थापना की जाती है। यह एक सात परतों वाला मंच होता है जिस पर कल्लरी के संरक्षक देवता परमभगवती (काली / शिव) की स्थापना की जाती है। प्रत्येक सत्र के प्रारंभ करने से पहले संरक्षक देवता की पूजा अर्चना की जाती है। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण स्थल को फर्श के तल से 3 से 4 फुट नीचे बनाया जाता है , साथ ही इसमें गीली लाल मिट्टी का प्रयोग किया जाता है।

कल्लरी प्रशिक्षण की मुख्यतया दो शैलियां प्रचलित है।

उत्तरी शैली :

इस प्रकार की शैली का अभ्यास उत्तरी मालाबार के क्षेत्रों में किया जाता है , इस शैली में हथियारों से लड़ने पर अधिक जोर दिया जाता है इसके अतिरिक्त इसको सिखाने के लिए गुरुकुल का प्रयोग किया जाता है। इस शैली में कल्लरी सिखाने की शुरुआत मेयपयाट्टू से की जाती है इसके अतिरिक्त चातुट्टी थिरुमल (पैरों की मालिश) से की जाती है।

दक्षिणी शैली :

इस प्रकार की शैली वाले कल्लरी का प्रयोग नायर / नादर द्वारा पुराने ट्रावनकोर के क्षेत्रों में किया जाता है। इसमें हाथों की आमने सामने की लड़ाई पर जोर रहता है , कहा जाता है कि इस विधा के जनक महर्षि अगस्त्य थे। इस शैली में कल्लरी सीखने का एक क्रम निश्चित है चुवातु (एकल) , जोड़ी (युगल) , कउरउन्थआदई (छोटी छड़ी/यष्टि) , नेदुवादी (लम्बी छड़ी) कट्टी (चाकू) , कटारा (कटार) , वलुम परिचयुम (लचीली तलवार) आदि है।

कल्लरी सीखने क्या क्रम :

मेयपयाट्टू :

यह कल्लरी सीखने का प्रारंभिक स्तर है इसमें शरीर को नियंत्रित और व्यवस्थित करना , मांसपेशियों और जोड़ों का व्यायाम करना , द्रुत व्यायाम (चट्टोम:उछलना , उत्तन:दौड़ना) आदि होते है। मांस्पेशियों के उचित उपचार करने के लिए कल्लरी चिकित्सा का प्रयोग किया जाता है।

कोल्थारीपयाट्टू :

यह कल्लरी का दूसरा चरण है, इसमें लकड़ी के हथियारों , ओट्टा (नुकीले हाथी दांत) , छोटे चाकुओं आदि अन्य हथियारों का उपयोग किया जाता है । इस क्रम का सारा प्रशिक्षण वैथारी कहलाता है।

अंकथारीपयाट्टू :

यह कल्लरी का तीसरा चरण है जिसके अंतर्गत नुकीले हथियारों के साथ युद्ध कौशल की कला सिखाई जाती है । तलवार , कवच , कटार ,कुल्हाड़ी, उरूमी (लचीली तलवार) आदि का अभ्यास करवाया जाता है। उरूमी के साथ कोई भी योद्धा उसको अपनी बेल्ट की तरह उपयोग कर सकता है और दुश्मन को यह भान भी नही होता है कि शत्रु किसी हथियार के साथ है।

वेरुमकाईपयात्तू :

यह कल्लरी सीखने का अंतिम चरण है इसमें हाथों की लड़ाई पर ज्यादा जोर दिया जाता है भले की दुश्मन किसी भी अस्त्र के साथ ही क्यों ना हो लेकिन आपको इस तरह से अभ्यास करवाया जाता है कि आप उससे आसानी से लड़ सकें।

कल्लरी का संबंध आयुर्वेद के साथ भी है पर इसका स्वरूप थोड़ा सा अलग मिलता है , कल्लारी मसाज दुनिया भर में प्रसिद्ध है , इसके अतिरिक्त कल्लरी चिकित्सा का अपना अलग महत्व है । कल्लरी का उपयोग केवल युद्ध के मैदान में ही नही बल्कि दक्षिण के नृत्य कथकली आदि में भरपूर तरीके से होता है , ऐसा माना जाता है कि जो नर्तक कल्लरी विधा में दक्ष है उसको कथकली में उतना ही अच्छा करेगा। यह देखा भी जाता है कि ऐसे नर्तक अन्य नर्तकों की अपेक्षा अधीन श्रेष्ठ होते है । परंपरागत नृत्य विद्यालयों में कल्लरी को उनके अभ्यास का जा बनाया जाता है।

1920 के बाद से कल्लरीपयाट्टू का पुनर्भव के लिए संपूर्ण दक्षिण भारत में प्रयास हुए है , सामूहिक प्रयासों के बाद इसकी स्थिति बेहतर हो पाई है , 1970 के बाद से इस युद्ध कला में लोगों की रुचि बढ़ाने में फिल्मों ने { (इंडियन (1996) , अशोका (2001) , द मिथ (2005), द लास्ट रीज़न (2007) बागी (2017), जंगली (2019) } सहायता प्रदान की है। इनके अतिरिक्त इसके सरंक्षण के लिए अनेक व्यक्तियों ने काम किया है । वीटिल नारायणन नायर, चिरक्कल टी. श्रीधरन नायर, श्री भरत कलारी , शंकर नारायण मेनन चुंडियल, मीनाक्षी अम्मा का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में फिलिप बी जरिली (कल्लरी में प्रथम पी एच डी प्राप्तकर्ता) , अभिनेता विद्युत जामवाल , टाइगर श्रॉफ , अभिनेत्री अदा शर्मा , अखिला शशिधरण आदि इसका प्रचार प्रसार कर रहे है।

मीनाक्षी अम्मा

मीनाक्षी अम्मा

भारत की स्वतंत्रता के 5 वर्ष पहले (1942 में) केरल के कोझिकोड जिले के वाटकारा नामक एक छोटे से कस्बे में एक लड़की का जन्म होता है , उसका नाम रखा जाता है कार्थियानी। उन दिनों पूरे भारत के साथ साथ केरल भी आजादी की लड़ाई लड़ रहा था । केरल में भी यह आवश्यक था कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए कल्लरी सीखे। कार्थियांनी अभी 7 की ही हुई थी कि उसके पिता ने उसे पास के वीपी राघवन गुरुक्कल में प्रवेश दिला दिया , यह विलक्षण बात थी कि वो पूरे गुरुकुल में पड़ने वाली इकलौती लड़की थी। धीरे धीरे वो कल्लरी सीखने में अपने साथ के सभी लड़कों से आगे ही नही निकली बल्कि उनको पछाड़ने भी लगी। जब वो 17 वर्ष की आयु की हुई तो उनका विवाह वीपी राघवन के (जो कि उन्हें कल्लरी सिखाते थे) साथ हुआ। दोनों ने अपने दांपत्य जीवन का आधार ही कल्लरी को बनाया। उनका यही सपना था कि कल्लरी जैसी प्राचीन विधा का प्रयोग और विकास लगातार होता रहे। 2007 में जब राघवन की मृत्यु हो गई तो पूरे परिवार के साथ साथ गुरुकुल को चलाने की जिम्मेदारी भी उन्ही के कंधों पर आ गई। तब से अब तक प्रत्येक वर्ष वे 150 छात्र छात्राओं को निशुल्क प्रशिक्षण देती है । जिसमे सुनिश्चित करती है कि एक तिहाई शिक्षार्थी लड़कियां हो।

आज भी 82 वर्ष की आयु में मीनाक्षी अम्मा (कार्थियानी का नया नाम) इतनी चुस्त सशक्त है कि 21 वर्षीय प्रशिक्षित युवक भी उन्हें छू नही सकता है। मीनाक्षी अम्मा बताती है कि "कल्लरी में सबसे अच्छी बात ये है कि ये सबके लिए है लिंग के आधार पर इसने कोई भेदभाव नही है और इसमें उम्र मायने नही रखती है आप जितना जल्दी सीखना प्रारंभ करेंगे उतनी ही कुशलता प्राप्त करेंगे।" इस का प्रमाण वह स्वयं अपने कृत्यों से देती है , उनके 2 पुत्र और 2 पुत्रियां हैं ,चारों ने 6 वर्ष की आयु से ही कल्लरी को सीखना प्रारंभ किया और उनमें एक पुत्र उसी गुरुकुल में कल्लरी का प्रशिक्षक है।

महिलाएं की सुरक्षा को लेकर भी मीनाक्षी अम्मा भी चिंतित है वे इसका समाधान कल्लरी को बताते हुए बात करती है कि "जब आप समाचार पत्र खोलते हैं, तो आप केवल महिलाओं के खिलाफ हिंसा की खबर देखते हैं। इसलिए, मैं हमेशा हर स्तर पर कहती हूं, सभी उम्र की महिलाओं के लिए कालारी सीखना बिल्कुल आवश्यक है जब महिलाएं इस मार्शल आर्ट को सीखती हैं, वे शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत महसूस करती हैं, और उन्हें काम करने और अकेले यात्रा करने के लिए आश्वस्त करती हैं। इस बारे में कोई संदेह नही है।"
मीनाक्षी अम्मा को वर्ष 2017 में भारत सरकार के द्वारा उनको कल्लरी जैसे प्राचीन मार्शल आर्ट्स की जीवंत रखने और नारी सुरक्षा के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

Caste Dynamics

In flux:

A modern lens on reservation and social change

By Himanshu Mishra

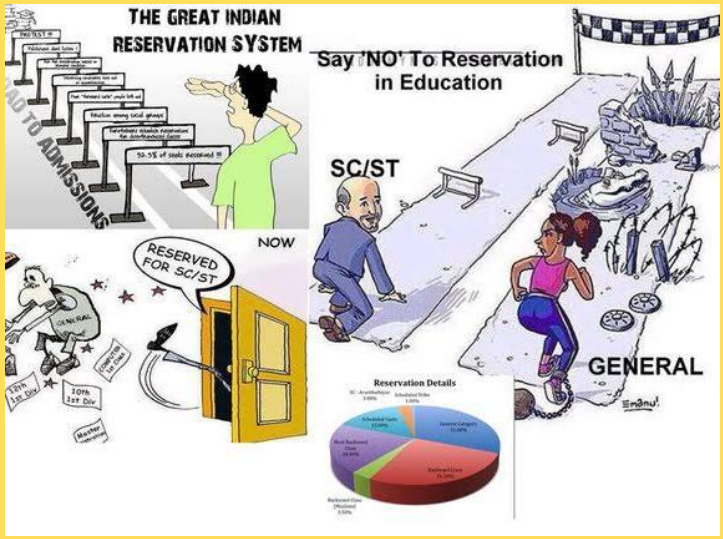

"Sir, I contend that there is no such class as a backward class. The Britishers wanted to dub many as backward classes and then play them up to the whole world and say that India consists of so many backward classes and so they do not deserve freedom. I do not want this term "backward classes" perpetuated in our Constitution. The sooner we do away with this, the better for our country, the better for our position in the world."

- Shri R. K. Sidhva

Shri R.K. Sidhva's statement from the 1947 Constituent Assembly discussions emphasises how divisive reservation policies are in India. In his remark, Sidhva expressed his firm view that the idea of backward classes is a British invention intended to uphold colonial authority and thwart India's independence movement. The British sought to stoke tensions within Indian society and provide justification for their enduring domination by branding some populations as backward.

Reservation policies have been the subject of a long-running controversy. While some view them as unjust and ineffective, others maintain that they are vital to remedy historical injustices and foster diversity .

The argument has picked up steam again in recent years because of numerous important rulings on the subject rendered by the Indian Supreme Court. The Supreme Court noted in Mukesh Kumar v. State of Uttarakhand that states are not required by the Constitution to provide reservations for public services, and that reservations for promotions cannot be regarded as basic rights. Going one step further, the Supreme Court in 2015 asked the Narendra Modi administration to eliminate reservations from higher education institutions on the grounds of "national interest," lamenting the fact that some benefits still stand even after more than 60 years of Indian independence.

The Caste Conundrum: Unravelling the Knotty History of Reservations in India

The affirmative action in India has started by Vice-Roy Curzon in 1905 by banning the employment of Hindu Bengalis in the government services; the official argument was that they were too advanced and taking away job opportunity from others particularly the Muslims.

Later it was extended in the military services by giving preferential treatments for Muslims and Sikhs branding them as martial races. Reservations in government jobs were introduced in 1918 in Mysore in favour of a number of castes and communities that had little share in the administration In 1909 and in 1919 similar reservation system was introduced for the Muslims in British India. In 1935, for pure political reason the British government has provided job reservation for the backward castes.

About 100 million members of the lowest strata of Indian society are part of the Scheduled Castes, who were designated as untouchables by the Government of India Act of 1935. . The Constituent Assembly unanimously decided to reserve seats in parliament and assemblies, as well as higher education and government employment, for the Scheduled Castes in proportion to their numbers and proclaimed untouchability unlawful in Article 17 of the Constitution . In addition to the constitutional guarantees, the Indian government has created a plethora of other protective legal mechanisms and "uplift" initiatives to enhance the well-being of its citizens.

The majority of India's Scheduled Tribes, who are indigenous people, also live well below the poverty level. Roughly fifty million of them make up 7% of the total population . The Scheduled Tribes are physically concentrated in three zones: the northeast, a central belt extending from Gujarat to Orissa, and isolated areas in south India. This contrasts with the Scheduled Castes, who are dispersed across India.

While speaking on the issue of reservations in the In Constituent Assembly, Ambedkar said –

"Supposing, for instafully employed in the public service communities who have not been so far employed in the public services to the fullest extent, what would really happen is, we shall be completely destroying the first proposition upon which we are all agreed, namely, that there shall be an equality of opportunity. Let me give an illustration. Supposing, for instance, reservations were made for a community or a collection of communities, the total of which came to something like 70 per cent of the total posts under the State and only 30 per cent are retained as the unreserved. Could anybody say that the reservation of 30 per cent as open to general competition would be satisfactory from the point of view of giving effect to the first principle, namely, that there shall be equality of opportunity? It cannot be in my judgment therefore the seats to be reserved, if the reservation is to be consistent with sub-clause (1) of Article 10, must be confined to a minority of seats."

A central commission was to be appointed in accordance with Article 340 of the Constitution in order to look into the circumstances of the underprivileged and offer suggestions for improving them. But the Fundamental Rights provisions —Part III, Articles 15(4) and 16(4) —gave both the federal and state governments the authority to enact laws granting preferential treatment to members of the lower classes, and before an all-India policy could be decided, a number of states started to establish and extend these benefits.

The first Backward Classes Commission, led by Kaka Kalelkar, was appointed by the Indian government in 1953 to create a policy. A list of 2,399 backward castes, including 116 million individuals (or around 32% of the total population), was compiled by the Commission. However, its members couldn't agree on whether caste should serve as a standard for identifying "backwardness." Five minutes of disagreement and Kalelkar's ambiguous sending letter, in which he doubted the caste criterion and sought alternative grounds for assessing backwardness, undermined their majority report (1955). Consequently, the federal government was reluctant to compile a list of backward castes that included all of India. It suggested that "it would be better to apply economic tests than to go by caste," but instead it left it up to the state governments to choose their own standards.

The Great Reservation Rift: Exploring the Divide Between Merit and Quota

According to the ruling in Champakam Dorairajan v. State of Madras , the Madras government has set aside a specific percentage of seats in state engineering and medical institutions for various groups based on factors such as caste, religion, and race. It was argued that this was unconstitutional.

Article 46 of the Constitution, which gives the state the authority to carefully advance the economic and educational interests of the weaker segments of society, including scheduled castes and scheduled tribes, in order to ensure social fairness, was used by the government to justify its decree. However, the Supreme Court overturned the decision, noting that it violated the equality protected by article 15 (1) and that directive principles cannot supersede the basic rights that are secured. Thus, the Parliament introduced an amendment to article 15 and inserted clause (4).
The Supreme Court ruled in Balaji v. State of Madras , that the government order reserving 68% of the seats available for admission to the engineering, medical, and other technical colleges is unconstitutional and goes beyond the equality provision because the Constitution does not set a limit on the provision of reservation.

The government's 68% reserve, which impacts merit applicants, was deemed excessive and unjust by the court. Nonetheless, the court established a 50% cap on the percentage of people who must be racialized to work in public jobs and educational institutions. However, it is regrettable that the 45-year-old 50% rule is still in effect despite significant changes in the SC/ST and OBC populations as well as a significant growth in the state's economic resources.

The judiciary has frequently been faced with the question of whether reservation may be extended to even one position within a cadre. In Dr. Chakradhar Paswan v. State of Bihar , the Supreme Court considered this issue for the first time and ruled that, in cases where a cadre has a single post, there cannot be any reservations made in relation to that post, either for initial recruitment or for filling vacancies in the future. "No reservation could be made under article 16(4) so as to create a monopoly," the court further said. If not, the equbased onromised by articles 16(1) and (2) would be illusory and meaningless. In Madhav v. Union, however, the Supreme Court stated that "reservation could be provided even to the isolated posts on the basis of rotation or roster system" in Madhav v. Union of India , Even if this remark makes sense, it can't be fully acknowledged because it requires rotation. However, in job-Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh v. Faculty Association , the Supreme Court overturned this ruling, holding that a single job in a cadre cannot be reserved either directly or using roster point rotation. The rationale was that a single post cadre reserve would equate to 100% reservation, which is against the law and goes beyond the scope of the constitution.

It is sometimes overlooked that the use of reservations as an affirmative action tool can have detrimental psychological effects by encouraging sentiments of inferiority . Affirmative action can undermine the interests of the same disadvantaged individuals it is designed to protect by portraying them as "inferior" or "incompetent or both, as one affirmative action expert notes. It might turn out to be "fulfilling negative prophecies" or "doubly cursed". In certain situations, despite the best of intentions to the contrary, it could further exacerbate polarisation or stigmatisation. The second component of the plan is generously awarding student employment, fee exemptions, bursaries, scholarships, and earn-while-you-learn programmes to members of underprivileged, vulnerable, and impoverished groups. The goal needs to be to make sure that no worthy and deserving student is denied access to higher education because they are unable to pay for it.

Conclusion and Alternative Pathways to Social Justice and Equality

"Reservation is not an end but a means - a means to secure social and economic justice... Reservation should not continue for an indefinite period of time so as to become a vested interest." - Justice Pardiwala

In light of these differences, some alternatives to affirmative action have been proposed, including utilising social capital, family income, and education as criterion; ranking the last school attended; determining opportunity costs based on neighbourhood; persuading those who are not beneficiaries of the system that it is fair; and guaranteeing X% of seats to students from nearby schools (such as the required 20% in Florida, 10% in Texas, and 4% in California).
It is important to remember that while marginalised groups like the SCs and STs are fighting prejudice, other groups like the Gujjars, Patels, Jats, Marathas, etc. are fighting to fit inside the boundaries of identities that are seen as outdated. This is done to get a certain quantity of state resources, or reserves based on community identities, rather than to undergo the same type of marginalisation, discrimination, and deprivation that the SCs and STs go through. Nonetheless, there is a lack of consistency from the government and the judiciary towards these groups, which leads to both good and bad rulings. Remarkably, the Gujjars." Instead of calling for political reservation, Patels, Jats, and Marathas restricted their demands to
jobs with the government and at educational institutions. In other words, these populations have grown cynical of political reservation.
However, it is important to recognize that reservation is not an end, but a means to an end. As Justice Pardiwala noted, reservation should not continue for an indefinite period to become a vested interest. Rather, it should be used as a tool to empower marginalized communities and promote their inclusion in the mainstream.

स्वामी विवेकानंद का आंतरिक संदेश

- रोमा पाठक

लेखन के लिए कई विषय उपलब्ध हैं, लेकिन जीवन में चुनाव की बात ही सर्वोपरि होती है। जब युवाओं की बात आती है , तो सबसे पहले एक ही नाम सामने आता है और वह है स्वामी विवेकानन्द जी का।

समय के परिवर्तन की बात सब करते हैं और साथ ही यह भी कि किस बात को किस छोर पर जाकर पकड़ा जा सकता है। लेखक/ लेखिकाओं ने जब अपना उत्तरदायित्व खोखले माध्यमों में देखना आरम्भ कर दिया, यथार्थ की ध्वनि एक मामूली चीख बनकर रह गई। उत्तरदायित्व का ज्ञान आसान हो ही नही सकता, किसी विचार पर बात करने और उसे सहजता से धारण करने में विशेष अंतर होता है..!

आन्तरिक ध्वनि की पुकार को सामने रखकर, एक ऐसा संवाद बुनने जा रही हूं जिसमें भारत का वो रत्न उपस्थित है जिसने हमेशा अपनी दृढ़ता के सर्वश्रेष्ठ माध्यम का चुनाव किया। एक ऐसे सन्यासी जो युवाओं के लिए संदेश देकर, अपनी यात्रा को राष्ट्र के प्रति समर्पित करके चले गए। वो विदेशी भूमि पर जाकर कहते हैं कि मैं संन्यासियों की परंपरा से आया हूं, यह बात युवाओं को अधिक सूक्ष्मता से समझनी चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द आज की परिस्थिति में, भारत के युवाओं को कोई संदेश देना चाहते तो वो क्या कहते, इसी बात को ध्यान में रखकर, उसे चित्रित करने का एक सहज प्रयास किया है, जो वर्तमान की परिस्थितियों को दर्शाता है।

(स्वामी विवेकानंद कुछ बेचैन दिखाई दे रहे हैं और एक जगह शांति से बैठे हुए हैं और स्व संवाद करते हैं)

भारत अपने आपको भूल रहा है, और मैं इस दुःख से बहुत विचलित हूं।

यह तो हमेशा से होता आया है, और संभव है कि आगे भी होगा। मेरे समय भी तो यही स्थिति थी..!

जिन व्यक्तियों को इस बात का ज्ञान है, वो आज भी निःस्वार्थ अपना योगदान दे रहे हैं...

युवाओं में मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है। अतीत को पूजनीय मानने वाली मेरी भूमी...अपनी संस्कृति के अवशेष तो समेट रही है, लेकिन उसे धारण करने में अब भी संकोच करती है।

मैं हमेशा कहता था कि भारत आंतरिक खोजियों का देश है। ज्ञान की यह धारा देर सबेर सही, फूटेगी अवश्य।

भारत के प्राचीन ज्ञान को मैं विश्व भर में फैलाना चाहता था, इस उद्देश्य के लिए मैं देश की सीमाओं के बाहर भी गया और सफल भी हुआ। लेकिन आज की स्थिति में युवाओं के मन में एक दुविधा बनी हुई है, जानें कैसे उसका हल होगा...?

समय के साथ कार्य करने के तरीकों में बदलाव आता है। एक बार जो आंतरिक समाधान के मार्ग पर आगे बढ़ गया उसके सामने कठिनाइयां भी कम नही हैं...!

मेरे जीवन में विश्राम था ही कहां..!

मेरी मृत्यु ही मेरा विश्राम थी।

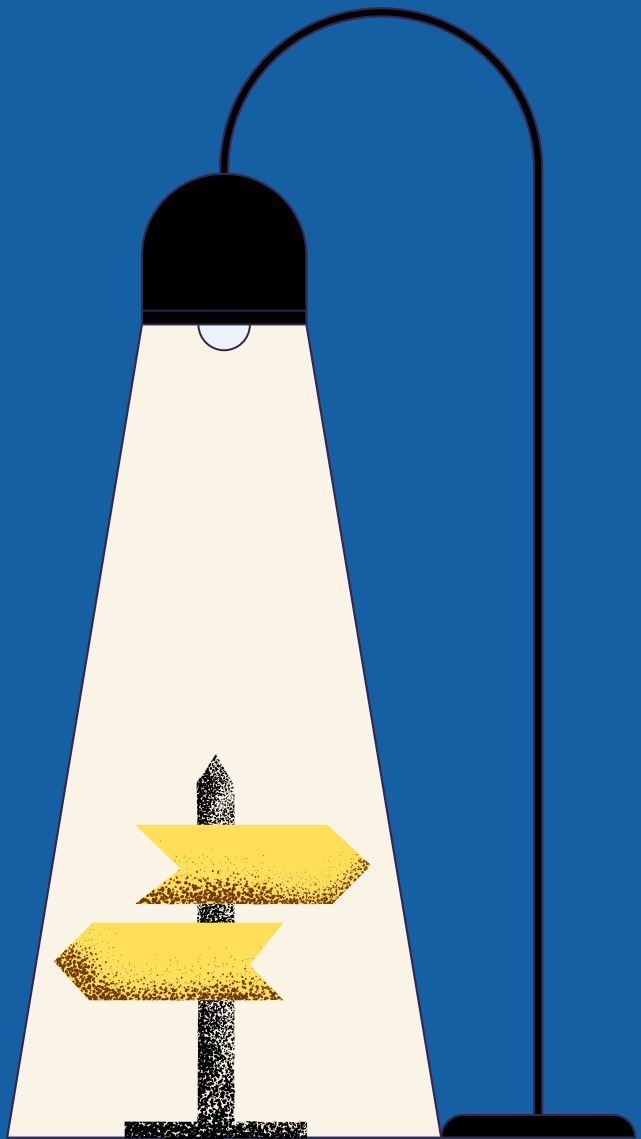

हमें व्यक्तिगत उत्थान तो करना ही चाहिए, लेकिन समग्र उत्थान के लिए कार्य करना हम सबका दायित्व है। पूरे भारत का भ्रमण करते समय मैंने भारत के छोटे से छोटे दुःख और समय के साथ हो रहे बदलाव को जाना। फिर अनुभव हुआ कि हमारे देश में अगर कोई भी परेशानी में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है तो हमें चैन से नही बैठना चाहिए।

उन दिनों, दिन प्रतिदिन मेरा स्वास्थ्य गिरता ही जा रहा था। मानसिक और शारीरिक थकान व्यक्ति को रुकने पर बाध्य कर देती है, लेकिन मुझे मेरे देश की स्मृति और गुरू के आदेश ने हर क्षण आगे बढ़ने को प्रेरित किया।

गुरू के ज्ञान और अपने भ्रमण से उपजी दृष्टि से मैंने यह जाना कि शांति से बैठने से कुछ नही होगा। मेरा यह जीवन मेरे देश का ही है। स्वप्न में भी ऐसा प्रतीत होता जैसे मां भगवती मुझे आदेश दे रही हैं।

वास्तविक बदलाव को जानना और उसे अपनाना हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य रहा। मैं जब भारतीय धर्म का प्रतिनिधि बनकर गया, तो विश्व के समस्त धर्मों को और वहां के ज्ञान को जाना, लेकिन जो हृदय भारत के पास है वह कही भी दिखाई नही दिया।

अमेरिका में लगभग चार साल के अपने प्रवास के दौरान मैंने जाना कि आधुनिकता का चरम जी रहे एक देश और भारत में कितनी भिन्नताएं हैं। इतनी कमियां होने के बाद भी अगर मैं सबसे अधिक किसी को प्रेम करता हूं तो वो मेरा देश भारत है। उस समय तक मुझे अनुभव हो चुका था कि मिश्रित हो चुकी संस्कृति के खंडहर से, भारत की आत्मा को पुनः स्थापित करना और अपने आप को एक समग्र रूप में देखना, सरल कार्य हो ही नही सकता।

निः स्वार्थ दया इस दुनिया की सबसे महंगी चीज़ है। भारत के युवाओं को अपने इतिहास की देखरेख का उत्तरदायित्व स्वयं लेना चाहिए। हमें अपनी मानसिक दयनीयता को त्यागना होगा।

जो कई वर्षों पहले मैंने कहा आज फिर कहता हूं...

हम उस धर्म के अन्वेषक हैं, जो मनुष्य का उद्धार करने के मार्ग दिखाता है। हम हर जगह उस शिक्षा को प्रसारित करना चाहते हैं, जो मनुष्य को मुक्त करे। मैं चाहता हूं कि, हमारे शास्त्रों का सत्य, देश और दुनिया में प्रचारित करने की योग्यता रखने वाले विद्यालयों का निर्माण बड़ी संख्या में होना चाहिए।

मुझे कुछ नही चाहिए, सच्चे नवयुवक चाहिए। सौ भी ऐसे युवक मिल जाएं तो संसार भर में क्रांति आ सकती है। पर ध्यान रहे कि आत्मबल सबसे ऊपर है, क्योंकि उसी में परमात्मा का अंश है।

अपने आपको जागृत करो, और तब तक नही रुकना जब तक तुम्हारे लक्ष्य की रौशनी , इस संसार के थोड़े से भी अंधकार को दूर न कर दें।

RECLAIMING FUNDAMENTAL DUTIES IN A CONFUSED REPUBLIC

By Sarthak Sharma

INDIA STANDS ON A CRUCIAL JUNCTION WHICH BIFURCATES INTO TWO WAYS, ONE, WHICH WILL GIVE IMPETUS TO ITS FLIGHT OF BECOMING A TRULY VIKSIT BHARAT (DEVELOPED BHARAT) BY MAKING THE MOST PRODUCTIVE USE OF HER DEMOGRAPHIC ADVANTAGE, HAVING THE YOUNGEST POPULATION ON THE PLANET, OR THE OTHER WAY, WHICH WILL FURTHER ENTANGLE THE NATION IN THE VICIOUS AND OBNOXIOUS CIRCLE OF CORRUPTION, DIVISIVE POLITICS AND IRRESPONSIBLE, VISION-LESS LEADERS WHO ARE INCLINED FOR THEIR SELFISH-INTERESTS, THEREFORE, ROBBING THE NATION OF HER LONG-AWAITED OPPORTUNITY TO BE A VIKSIT RASHTRA (DEVELOPED NATION) AND A POWER CENTRE IN THE ARENA OF INTERNATIONAL POLITICS.

Amidst the clarion calls for an unending list of rights which an Indian citizen shall enjoy and be guaranteed by the State, thereby forming a focal point in domestic politics, Fundamental Duties unfortunately find no influential position in the discourse of the Developing India. To be truly developed as a major economic hub, a thriving democracy, an equitable society and a culturally diverse nation, we need to reclaim Fundamental Duties in this Confused Republic. Republic confused because of the negligence of core duties as a citizen and overemphasis on the rights enjoyed without realization of the reverence towards the nation.

The eminent framers of our Constitution knew the importance of Fundamental Rights in a nation which was standing on the critical question of survival or its further divisions into a Balkan region. Back in 1947, when our nation, the Undivided India, was partitioned into India, West and East Pakistan, the darkest episode of communal riots followed amidst the high uncertainty over the unity of our nation which was formed after the Unification of Princely States and Provinces, therefore, the Constitution makers listed the core Fundamental Rights like Right to Equality, Liberty, Speech and Expression among several others in the Part III of the Constitution, which is legally enforceable, that is, in case of violation of such rights, the grieved can approach the Judiciary for redressal as underlined by the Article 32 – Right to Constitutional Remedies.

FUNDAMENTAL RIGHTS WILL ALWAYS CONTINUE TO FORM THE CORE FOUNDATIONAL PRINCIPLES OF THE INDIAN DEMOCRACY WHICH ASSURE EQUALITY, LIBERTY, DIGNITY AND FACILITIES IN ALMOST ALL REALMS OF AN INDIVIDUAL'S LIFE, BUT THE TRENDS OF DOMESTIC POLITICS HAVE SHIFTED CONSIDERABLY SINCE THE FOUNDATION OF THE CONSTITUTION SO MUCH SO THAT OVEREMPHASIS ON RIGHTS HAS NEGATED THE RESPONSIBILITY OF CITIZENRY IN THEIR ACTIVE PARTICIPATION IN NATION BUILDING. THE NATION BUILDING ROLE HAS BEEN OUTSOURCED TO THE GOVERNMENT, WHICH IS PLAGUED WITH CORRUPT OFFICIALS, WHO ARE UNBOTHERED BY THE PROGRESSIVE INITIATIVES AND RATHER FOCUS ON PERSONAL GAINS BY MALICIOUS MEANS, TAKING THE RECENT SHOCKING CASE OF IAS PROBATIONER POOJA KHEDKAR, WHO IRONICALLY WROTE THE ETHICS, INTEGRITY AND APTITUDE PAPER IN UPSC MAINS WHILE SITTING ON THE CUMULATIVE LIES OF FORGED DOCUMENTS AND FAKE DISABILITY. WHILE ALSO TAKING INTO ACCOUNT THE TRAGIC MISHAP IN THE OLD RAJINDER NAGAR OF NEW DELHI WHERE REPORTEDLY 3 STUDENTS DROWNED TO DEATH IN AN ILLEGAL BASEMENT LIBRARY OF A REPUTED COACHING CENTRE WHICH INDICATES PURE NEGLIGENCE OF THE MUNICIPAL CORPORATION, THE STATE GOVERNMENT AND THE LAW ENFORCING BODIES TO UNCOUNTABLE INSTANCES OF PEOPLE INVOLVING IN ACTIVITIES CAUSING COMMUNAL DISHARMONY AND POTENTIAL HARM TO THE INTEGRITY OF THE NATION BY ALIGNING WITH GLOBALLY FUNDED ORGNAISATIONS THAT HAVE REPETITIVELY WORKED AGAINST THE TERRITORIAL INTEGRITY OF OUR NATION, TO THE FREEBIES PROMISED BY THE GOVERNMENTS OF ALL POLITICAL PARTIES WOOING VOTERS AGAINST THE BACKDROP OF FRAGILE STATE ECONOMIES.
THEREFORE, IN TODAY'S TIME, FUNDAMENTAL DUTIES AS ENSHRINED IN PART IV-A OF THE CONSTITUTION NEED TO BE SERIOUSLY INGRAINED IN THE CITIZENS TO INCULCATE A SENSE OF DUTY AND BELONGING TO OUR COUNTRY AND HER CITIZENS. FUNDAMENTAL DUTIES ARE NOT MERELY A LIST OF A FEW ROLES TO PLAY BUT ARE THE FOUNDATIONAL VALUES BASED ON WHICH THE CITIZENS OF OUR NATION SHALL BASE THEIR PUBLIC INTERACTION UPON. FUNDAMENTAL DUTIES IF INCULCATED IN OUR CITIZENS, RIGHT FROM THEIR FORMATIVE YEARS OF CHILDHOOD, WILL BENEFIT THE COUNTRY PROFUSELY IN INTANGIBLE TERMS AND WOULD FORM A BASE OF ACTIVE RESPONSIBLE CITIZENS. THIS COULD BE UNDERSTOOD BY DISCUSSING A FEW OF THE FUNDAMENTAL DUTIES AS LISTED IN ARTICLE 51A.

- To abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem, this duty underlines the respect and actualising the ideals of equality, liberty and dignity in the real life of the citizens and society.
- To cherish and follow the noble ideals that inspired the national struggle for freedom, this duty would forge a sense of selflessness and would rule out any other individual or collective interest which is antagonistic to the national interest.
- To uphold and protect the sovereignty, unity, and integrity of India, this duty holds paramount value as several secessionist movements and separatist demands have cropped up around the nation which puts the integrity of the land in danger.
- To defend the country and render national service when called upon to do so, this duty underlines the love, affection and commitment to the cause of nation which shall never be compromised by the citizens, free from the confines of identity and ideology.
- To promote harmony and the spirit of common brotherhood and to renounce practices derogatory to the dignity of women, the duty also presumes pivotal importance in wake of communal disharmony, clan-based skirmishes and violence against women which are on an unfortunate rise despite the nation's call for an equitable society.
- To protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, and wildlife, and to have compassion for living creatures, in wake of environmental catastrophes, climate change, illegal mining, sand mafias, riverbed encroachments and unsustainable development, this duty underlines the importance of sustainability and harmonious development with nature.
- To safeguard public property and to abjure violence, in a nation where we encounter violence in name of protests and self expression, such a duty shall instill the moral obligation in the minds of citizens that public property is availed on the costs of their own taxes and any attempt to damage it must always invite stricter punishments on the miscreants.

Article 51A lists eleven such Fundamental Duties, seven of which are discussed in this article. Although them exists long standing debates on the importance of Fundamental Duties in lieu of the fact that they are not enforceable as Fundamental Rights, but it does not lessen their importance in the World's Largest Democracy. In fact, in AIIMS Student Union vs AIIMS 2001 Case, the Supreme Court ruled that Fundamental Duties hold equal importance as Fundamental Rights and that the word 'fundamental' indicates the equal pedestal that they have.
In the liberal political thought, which elucidates the core conceptions like liberty, mentions that freedom is not absolute and has justified constraints, so does our enjoyment of rights. In a progressing country like India, which has land area at par of a subcontinent, with the largest population on earth with different cultural, spiritual and religious affiliations and the sprouting of activities that hamper this growth trajectory, it is the final call for our Confused Republic to have a balanced and co-joint approach to Fundamental Rights and Fundamental Duties, such that both are inseparable from each other and the absence of one would render the presence of other as incomplete.
If followed by heart, the Fundamental Duties along with abeyance to our Constitution and Nationalism hold the key for a Viksit (developed), Samarth (successful) and Atmanirbhar (Self dependent) Bharat!

यमुना का क्रोध

ये बात नही है हास्य की ,
आते हुए विनाश की।
पावन यमुना बहती है,
दिल्ली की साँसे थमती हैं।
कई सदियों का कर्म है ये,
अब सादिया कई बिगाड देगा।
अगर ऐसे ही बहती रही यमुना,
फिर कौन यहां बचा रहेगा ।
इमारतें जो धरोहर है हमारी ,
बाढ़ आई तो बन जाएंगी कहानी।
स्कूल, कॉलेज, बस और गाड़ी
सब जीवन के आधार है,
पर अब इनके चलने में खतरे हज़ार हैं।
ना कोई हिंदू, ना मुसलमान, ना दिल्लीवाले, ना बाहरी है,
यमुना के क्रोध में सब बराबर के अधिकारी है।
पर्यावरण को बर्बाद करने मे सबकी भागीदारी है,
अब दिल्ली में जो भी होगा वो सबकी जिम्मेदारी है।
उस पावन नदी को छेड़ा ही क्यों,
प्रकृति से खेला ही क्यों।
अब सब मौन क्यों बैठे हो,
जब कांड किया तो रोना क्यों।
चाहे सरकार बदलती है,
पर काम कोई ना करती है,
जब हद पार हो जाती है,
तब इनकी गाइडलाइंस छपती है।
यह बात नही है हास्य की ,
आते हुए विनाश की।
अभी भी ना सभंले जो लोग ,
तो फिर बारी है किसी और राज्य की
यह बात नही है हास्य की ।।

- करिश्मा मिश्रा

मृत्यु का भय नहीं

मरने का भय नही,
लड़ने का मोह है
डरने का वक़्त नही,
कुछ करने का लोभ है
राष्ट्र के गौरव हेतु
समर्पित होने की आशा में
आंखों में चिंगारी लिए
दिल में लिए जिगर सिंह सा
वर्दी पहने फौज की
रगों में शान तिरंगे की
धरतीपुत्र वो हिंद का
करे वो नाम हिमालय सा
दुश्मन टेके घुटना अपना,
रख दे मस्तक चरणों में
धारा से उठके जांबाज़ों ने
जाने कितनी माताएँ तड़पाई है
रख ली लज्जा एक माँ की
दूसरे को रुलाई हैं
वीरों ने दी आहुति प्राण की
धरती की आज़ादी सींची है
रख लो लाज उन रक्त बीज का
जिसने हमारे अस्तित्व की रेखा खींची है।।

- आयुष नायक

ALSO READ OUR PREVIOUS MAGAZINES

https://www.campuschronicle.in/e_magazine/

campus_chronicle

campus_chronicle

delhicampussaga

VISIT OUR WEBSITE

- Catch the latest news and articles
- Get Monthly Magazines
- Read anytime, anywhere

WWW.CAMPUSCHRONICLE.IN

Meet Us

Ankush

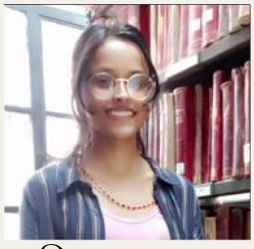
Somya

Punyavee

Shivansh

Priyanka

Sneha

Ayush

Anannya

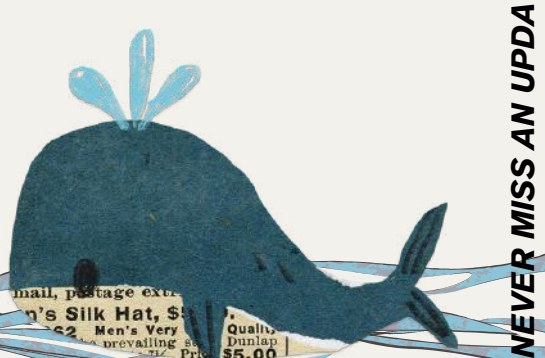

NEVER MISS AN UPDATE!